

मध्यस्थ दर्शन 'अध्ययन यात्रा' संक्षिप्त दृश्य

'मध्यस्थ दर्शन' ज्ञान संपन्न होने एवं जीने का मार्ग है | यहाँ इसके अध्ययन के यात्रा को दर्शाया गया है | इसमें समय लगता है |

अध्ययन में मुख्य रूप से चार स्तर है |

प्रत्येक स्तर में कुछ "चरण" हैं, जिससे गुजरने से उस स्तर की जानकारी पूरी होती है |

- **स्तर 1: प्राथमिक नीव (Primary Foundation)**

- इस स्तर में मध्यस्थ दर्शन के मूल तत्वों से अवगत होकर, ग्रंथों को पढ़ने की योग्यता विकसित होती है
- इसमें 3 चरण हैं { परिचय शिविर, अध्ययन बिंदु, अवलोकन }

- **स्तर 2: अध्ययन (श्रवण) (Study)**

- इस स्तर में दर्शन के मूल ग्रंथों को पढ़कर समझते हैं
- इसमें 2 चरण हैं { पुस्तक पठन + अध्ययन पुनर्वृत्ति गोष्ठी }

- **स्तर 3: अभ्यास (मनन) (Practice)**

- इस स्तर में अभ्यास में तीव्रता आती है
- इसमें 1 चरण है { अभ्यास }

- **स्तर 4: समझ (ज्ञान) (Understanding)**

- इस स्तर में वास्तविकताओं को सीधे जानते हैं
- इसमें 3 चरण हैं (साक्षात्कार-बोध-अनुभव)

प्रस्तुति आशय:

नवीन अध्येताओं के लिए मार्ग जानकारी सुलभ होना (छात्र अनुमान अनुसार)

श्रीराम नरसिम्हन, छात्र, 07.02.2025

*मूल प्रणेता एवं लेखक - श्री ए. नागराज

कड़ी	शिविर / अध्ययन श्रृंखला क्रम === >				
	~समय	उद्देश्य	शिविर / गोष्ठी	मुख्य अभ्यास	
प्राथमिक आधार स्तर					
परिचय	~6 से 9 माह	मानव में जागृति एवं अध्ययन की आवश्यकता	-जीवन विद्या प्राथमिक परिचय शिविर	सुनना, जांचना	
अध्ययन के बिन्दुओं से अवगत होना	~6 से 9 माह	मूल तत्वों से अवगत होना	-अध्ययन बिंदु शिविर	पढ़ना, मंथन, जांचना	
अवलोकन			- 'मूल तत्व अवलोकन' शिविर *		
अध्ययन स्तर (श्रवण)					
प्रथम पठन + आवृत्ति	~ 1 से 2 वर्ष	दर्शन सम्पूर्ण से अवगत होना	-अध्ययन शिविर (अंश/ पूर्ण कालीन) -‘अध्ययन-अभ्यास विधि परिचय’ शिविर*	शास्त्राभ्यास > समझना	
विधिवत शास्त्राध्ययन	~ 4 से 8 वर्ष	दर्शन सहज तर्क संगत निष्कर्ष /आभास स्मृति में आना	-अध्ययन (श्रवण) गोष्ठी - ग्रंथों में: “अध्ययन विधि, प्रमाण विधि”: तात्पर्य गोष्ठी	शास्त्राभ्यास प्रधान + कर्माभ्यास + व्यवहार पर ध्यान	
अभ्यास स्तर (मनन)					
‘विधिवत मनन’ + अभ्यास	(जारी)	=> निष्कर्षों पर मनन एवं प्रतिदिन अभ्यास, गोष्ठी > “तीव्र इच्छा” => गुणात्मक परिवर्तन	‘मनन -अभ्यास गोष्ठी*’ ; अभ्यास नियमावली (संकलन)	व्यवहाराभ्यास प्रधान, स्व-निरीक्षण अभ्यास	
समझ स्तर (ज्ञान)					
समझ/ ज्ञान	(जारी)	=>साक्षात्कार, अवधारणा पूर्वक स्थिरता (“वस्तु बोध = अध्ययन”) बोध, अनुभव	-अवधारणा गोष्ठी * -अनुभव शिविर (सत्यापन)	चिंतनाभ्यास (योगाभ्यास) प्रधान	

“*” = प्रस्तावित नवीन शिविर/ गोष्ठी

संसाधन#

1. [ऑनलाइन ग्रंथालय सम्पूर्ण](#)
2. विद्यार्थी शिविर: [YouTube Jeevan Vidya Official](#)
3. नागराजजी: [YouTube @ Madhyasth Darshan Originals.](#)

कड़ी का संक्षिप्ति एवं अपेक्षित फल-परिणाम (सामान्य भाषा में)*

* अनुभव मूलक विधि से ही न्याय-धर्म-सत्य, एवं मानव-देव-दिव्य मानवीयता प्रमाणित होता है

संक्षिप्ति एवं अपेक्षित फल-परिणाम
प्राथमिक आधार स्तर
चरण #1 परिचय शिविर
युवा एवं प्रौढ़ों के लिए मध्यस्थ दर्शन की यात्रा सात दिवसीय जीवन विद्या परिचय शिविर से प्रारंभ होता है जीवन विद्या परिचय शिविर से मनुष्य के जीवन के सम्पूर्ण आयाम एवं सारे परिस्थियों के बारे जानकारी मिलती है, व इनसे सम्बंधित रहस्यों का उन्मूलन होता है, साथ में समाधान का रास्ता स्पष्ट होता है एक से अधिक प्रबोधक का 2-3 परिचय शिविर करना सुझावित है इसमें 6 माह से 1 वर्ष का समय लग सकता है * परिचय शिविर के सामान्य फल (*सभी फल: पूर्व संस्कार, अध्ययन-अभ्यास एवं वातावरण आधीन है) ~स्पष्टता • मनुष्य जीवन एवं सच्चाई के प्रति स्पष्टता • आध्यात्म/इश्वर/देवी देवता सम्बन्धी भ्रम दूर होना • व्यक्ति, परिवार, समाज, एवं प्रकृति के चरण संगीत हेतु व्यक्तिगत समाधान की आवश्यकता स्पष्ट होना • मानवीय शिक्षा, उत्पादन, विनिमय, न्याय के प्रति ध्यान जाना • जागृत होने, अध्ययन की आवश्यकता स्पष्ट होना • जिन्दगी की सार्थक दिशा मिले ~गुणात्मक परिवर्तन • रूप/बल/धन/पद के प्रति भ्रम-भय का क्षय होना • भौतिकता से ध्यान हटकर व्यवहार, समाज एवं बौद्धिकता के ओर जाना • व्यवहार में सतर्कता बढ़ेगा, बड़ें गलतियों से बचना • निकट संबंधों में ध्यान एवं सुधार: माता-पिता, पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री...

चरण #2 अध्ययन बिंदु

अध्ययन बिंदु शिविर, श्री ए.नागराज के द्वारा लिखित 'जीवन विद्या 44 उद्धोधन बिन्दुओं' का व्याख्या है | इसमें मध्यस्थ दर्शन के मूल तत्वों से अवगत होना होता है – जैसे सहअस्तित्व दर्शन ज्ञान, चैतन्य रूपी जीवन ज्ञान में १- क्रियाएं, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान, विवेक, विज्ञान, अखंड समाज एवं सार्वभौम व्यवस्था | साथ में मध्यस्थ दर्शन का भौतिकवाद एवं आदर्शवाद का 'विकल्प' होना स्पष्ट होता है |

३-६ माह के अंतराल में एक-दो अध्ययन बिंदु शिविर करना सुझावित है |

*** इस कड़ी के सामान्य फल**

(*सभी फल: पूर्व संस्कार, अध्ययन-अभ्यास एवं वातावरण आधीन है)

स्पष्टता

- दर्शन के मूल अध्ययन के बिंदु: अस्तित्व दर्शन ज्ञान, चैतन्य जीवन ज्ञान एवं मानवीय आचरण ज्ञान के प्रति अवगत होना
- विवेक एवं विज्ञान
- स्वयं अध्ययन की आवश्यकता बलवती होना
- अस्तित्व तर्क सांगत, समझने योग्य लगने लगता है

~गुणात्मक परिवर्तन

- स्वयं पर ध्यान बढ़ना,
- व्यवहार में ध्यान

चरण #3 अवलोकन (Optional)

“अवलोकन शिविर” में मध्यस्थ दर्शन के मुख्य अध्ययन के बिन्दुओं पर चिन्हित बात हो पाती है, साथ में सम्पूर्ण वांग्मय का परिचय है, तथा इन्हें पढ़ने के विधि को लेकर विमर्श होता है | साथ में अध्ययन एवं अभ्यास के विधि का परिचय मिलता है | अवलोकन शिविर का उद्देश्य मध्यस्थ दर्शन पुस्तकों को पढ़ने में सुलभता, एवं पढ़ने के अनंतर समेटने में मदद करता है | इसमें ‘चैतन्य जीवन’ को केंद्र में रखते हुए, ‘अस्तित्व’ का अध्ययन करने का मानसिकता स्पष्ट हो जाता है | | **प्रथम पठन के पूर्व में ‘अवलोकन Module’ हेतु पठन एवं सुनना लगभग 9 माह से 1 वर्ष लग सकता है | अवलोकन के अनंतर अध्ययन शिविर करने से पुस्तकों को पढ़ने की अच्छी पूर्व तय्यारी हो जाती है |**

***इस कड़ी के सामान्य फल**

(*सभी फल: पूर्व संस्कार, अध्ययन-अभ्यास एवं वातावरण आधीन है)

स्पष्टता

- दर्शन सम्पूर्ण के मुख्य वस्तुओं पर ध्यान
- मुख्य शब्द/भाषाओं को छांटना, उनका दर्शन में पहचान.
- परिभाषा विधि का महत्व.
- अध्ययन एवं अभ्यास का सामान्य चित्र: पठन, व्यवहार, परिवार, व्यवसाय-आर्थिक पक्ष एवं समाज में भागीदारी होने में संतुलन
- स्वयं समझने, सुधरने की आवश्यकता

अध्ययन स्तर (श्रवण)**चरण #4 प्रथम अध्ययन /पठन,****चरण #5 अध्ययन आवृत्ति**

मध्यस्थ दर्शन अध्ययन शिविर विधिवत १२ पुस्तकों का अध्ययन है (4 दर्शन, 3 वाद, 3 शास्त्र, परिभाषा एवं संविधान) | इसमें कोई ज्येष्ठ अध्येता साथ में रहते हैं एवं पूर्ण कालीन अथवा अंश कालीन माध्यम से पूरा किया जा सकता है | इसमें समझने, जीने एवं मानवीय व्यवस्था एवं परंपरा का सम्पूर्ण सूचना सामने आ जाती है, एवं आगे इसे समझने एवं जीने का मन तैयार होता है | **अध्ययन शिविर 6 माह से 2 वर्ष, पूर्ण एवं अंश कालीन विधियों में उपलब्ध हैं |**

*** इस कड़ी के सामान्य फल**

(*सभी फल: पूर्व संस्कार, अध्ययन-अभ्यास एवं वातावरण आधीन है)

- भाषा पर पकड़ बढ़ता है विद्वता
- चिंतित करने – सोचने का दायरा विशाल होता है
- तर्क सटीक होने लगता है
- मनुष्य जीवन को समझना सुलभ हो गया
- समस्याओं के मूल कारण ध्यान में आवें, उनका समाधान का पहचान, , परिस्थितियों के लिए अपना जिम्मेदारी स्वीकार होना
- स्वयं पर ध्यान, व्यवहार पर ध्यान ~ मानवीय आचरण के भास् पूर्वक जीना
- अभ्यास के सभी अंगों पर संतुलन पूर्वक ध्यान जाना (शास्त्र, स्व-निरीक्षण, व्यवहार, कर्म, व्यवस्था)

चरण #5: अध्ययन (श्रवण)-अभ्यास गोष्ठी

अध्ययन-अभ्यास गोष्ठी – पुस्तकों को कई बार पुनः-पठन के साथ साथ अपने समझ / मान्यता / निष्कर्षों को जांचने, अभ्यास के विधियों को समझने एवं परस्पर मिली के लिए अवसर है | यह छोटे समूहों में होता है | इस चरण में सारा भाषा सिमटकर सूत्र रूप में हमारे में हो जाता है |

इस क्रम में पुस्तकों को 2 से 8 बार पढ़ना हो जाता है एवं 4 से 8 वर्ष लग सकते हैं |

अभ्यास स्तर**चरण #6 मनन**

मनन गोष्ठी, सम्पूर्ण वांगमय पर 'श्रवण' अधिकार के पश्चात, अपने 'समझ' जैसे स्वयं होने के लिए, ज्ञान सम्पन्न होने के लिए केन्द्रित होने के लिए है | इसमें व्यवहार, स्व-मूल्यांकन एवं समझ के मुद्दों पर महीन बात हो पाती है | इस भूमि में भाषा कम हो जाता है, अर्थ अधिक हो जाता है | **मनन में प्रौढ़ता आने में कई वर्ष लगता है, यह हमारा पूर्व संस्कार एवं स्वयं प्रमाणित होने के तीव्र इच्छा पर निर्भर करता है |**

*** इस कड़ी के सामान्य फल**

(*सभी फल: पूर्व संस्कार, अध्ययन-अभ्यास एवं वातावरण आधीन है)

- स्वयं सुधारने का कार्य गति लेता है – अमानवीय प्रवृत्तियों की क्षीणता ~ मानवीयता के अभास पूर्वक जीना
- अपने कमियों, गलतियों का पहचान, उसमें सुधार
- दर्शन में अधिकार, विद्वता विकसित हो जाता है
- तर्क शक्तिशाली हो जाता है ~ प्रज्ञाशील
- समाज के लिए सार्थक भागीदारी कर पाते हैं

समझ स्तर (वस्तु बोध, अध्ययन)**चरण#7 , #8, #9 साक्षात्कार/अवधारणा, बोध, अनुभव**

साक्षात्कार में हम समझे हुए, मनन किये हुए निरंतर रहें वाले वास्तविकताओं को अस्तित्व में 'वस्तु' रूप में पहचान लेते हैं, इसका ज्ञान होता है | साक्षात्कार में भाषा एवं तर्क नहीं रहता, साक्षात्कार होने से वस्तु पर विश्वास एवं वैसे जीना में निष्ठा बन जाता है | साक्षात्कार होने से पुस्तक पीछे छूटना शुरू हो जाता है | **मनन-साक्षात्कार-जीना क्रम में अवधारणा रूपी स्थिरता आने में समय लगता है | यह हमारा पूर्व संस्कार एवं स्वयं प्रमाणित होने के तीव्र इच्छा पर निर्भर करता है |**

अवधारणा होने से अमानवीयता/ निषेध पीछे रह जाता है | विकसित चेतना का ज्ञान होता है |

बोध में साक्षात्कार किये वस्तुओं पर दृढ़ता बन जाति है | बोध होने से पुस्तक पीछे छूट जाता है |

अनुभव में ज्ञान पूर्ण हो जाता है |

साक्षात्कार-बोध क्रम में स्वयं में विश्राम, सुख, शांति, संतोष होने लगता है, एवं अनुभव पूर्वक आनंद की निरंतरता होता है |